अखिल भारतीय किरार क्षत्रिय महासभा एवं अखिल भारतीय श्री धाकड़ महासभा के संयुक्त तत्वावधान में 22 अप्रैल 2018 को भेल, दशहरा मैदान, भोपाल में आयोजित होने वाले अखिल भारतीय युवक–युवती परिचय सम्मेलन में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

1. अखिल भारतीय किरार क्षत्रिय महासभा एवं अखिल भारतीय श्री धाकड़ महासभा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित होने वाले अखिल भारतीय युवक–युवती परिचय सम्मेलन के इस मंच पर आकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। श्रीमती साधना सिंह चौहान जी एवं सम्मेलन के संयोजक श्री रोडमल नागर जी यहां पर उपस्थित हैं, उनका एवं सभी आयोजनकर्ताओं का मैं अभिनंदन करती हूं।

2. इस संस्था के "logo" में 'शक्तिरेव जयते' का आदर्श वाक्य इस संगठन की शक्ति का प्रतिरूप है। अपनी एकजुटता और संगठन शक्ति से किरार क्षत्रिय महासभा ने सामाजिक व राष्ट्रीय दायित्वों का उत्कृष्ट तरीके से निर्वहन किया है। इस समाज की एकता में शक्ति निहित है। शास्त्रों में लिखा हैः–

''संभोजनं संकथनं संप्रीतिश्च परस्परम्।
जातिर्भिः सह कार्याणि न विरोधः कदाचन।।''

(समाज के जनों के साथ परस्पर संभोजन, वार्तालाप एवं प्रीति रखनी चाहिए। विरोध कभी नहीं करना चाहिए।)

3. सादगीपूर्ण तरीके से एवं कम खर्च पर सामूहिक विवाह करने के उद्देश्य से आयोजित ऐसे सम्मेलनों का आयोजन वास्तव में न जरूरतमंद परिवारों की मदद का उचित मंच है बल्कि समाज के अन्य वर्गों के लिए भी एक आदर्श और प्रेरणा का कारक है। यह समाज में, सामाजिक व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन लाने का माध्यम बन गया है। आर्थिक रूप से सक्षम नहीं होने के बाद भी लोग शादियों पर कर्ज लेकर खर्च करते हैं। इस दिशा में समाज में जागरूकता लाना आवश्यक है।

4. अखिल भारतीय किरार क्षत्रिय महासभा एवं अखिल भारतीय श्री धाकड़ महासभा जैसे सामाजिक संगठन समाज के लोगों को एक प्लेटफार्म उपलब्ध कराते हैं जहां से वे अपने द्वारा किए गए रचनात्मक कार्यों के माध्यम से समाज के अन्दर व्याप्त कुरीतियों को समूल नष्ट कर एक उत्कृष्ट एवं प्रगतिशील समाज बनाने का काम करते हैं यही आगे चलकर विकसित राष्ट्र के आधार का कार्य करता है।

5. सामाजिक कल्याण की दिशा में आपके संगठन ने उत्कृष्ट कार्य किया है। मुझे बताया गया है कि पिछले तीन वर्षों में संस्था द्वारा हर जनपद में संस्कार शिविर एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है। दहेज प्रथा की समाप्ति, मृत्यु भोज पर रोक, कन्या भ्रूण हत्या रोकना तथा व्यसन मुक्ति कार्यक्रम जैसे कई ऐसे सामाजिक कार्यक्रम हैं जिन पर ऐसी संस्थाएं मुखर होकर जनता में संस्कारों के बीज बोने का कार्य करते हैं।

6. ऐसा परिचय सम्मेलन न केवल युवाओं बल्कि समाज के समस्त लोगों को सामाजिक तौर पर नजदीक लाता है बल्कि समाज के युवा एवं बुजुर्ग लोग कैसे

एक दूसरे के साथ समन्वय के साथ मिलकर काम करें, कैसे हमारी सदियों की सांस्कृतिक परम्पराओं का हस्तांतरण पुरानी पीढ़ी से नई पीढ़ी में हो, उन सामाजिक गुणों और थातियों को युवाओं को सौंपने का काम भी ऐसे सम्मेलन के माध्यम से होता है।

7. ऐसे सम्मेलन सिर्फ परिचय तक सीमित नहीं रहते हैं बल्कि उससे भी आगे बढ़कर सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं भौतिक उन्नति का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं। लोग रूचि लेकर इन कल्याणकारी कार्यों में हिस्सा लेते हैं। ऐसे संगठन राजनीतिक एवं लोकतांत्रिक प्रक्रिया में समाज के हितों के संरक्षण, संवर्धन एवं सामाजिक समरसता स्थापित करने की दिशा में समन्वय का भी काम करते हैं।

8. Technology एक ओर जहां लोगों एक दूसरे के निकट लाने का काम कर रहा है, वहीं Emotion के level पर दूरियां बढ़ रहीं हैं। परिवार के लोग भी आजकल जन्मदिन, Marriage Anniversary इत्यादि के मैसेज फेसबुक, व्हाट्सएप्प पर दे देते हैं। चूंकि Emotional Quotient (EQ) में गिरावट आई है इसलिए सामाजिक स्तर पर दूरियां बढ़ती हुई देखने को मिल रही हैं।

9. पहले जिस उत्साह और गर्मजोशी के साथ समाज के लोग सामाजिक कार्यक्रमों में मिलते थे, अब वह पहले जैसा नहीं रहा। पारिवारिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर लोगों में एक दूरी का निर्माण हो रहा है। अतः, हमें अपनी युवा पीढ़ियों को यह सिखाने की, उन्हें ये बताने की आवश्यकता है कि परस्पर आपसी एवं सांस्कृतिक संबंध हमारे लिए कितने महत्वपूर्ण हैं?

11. जिस आतिथ्य भाव के लिए भारत संपूर्ण विश्व में जाना जाता है, उस **''अतिथि देवो भवः''** की परम्परा को सुरक्षित, संरक्षित एवं संवर्धन करने की जिम्मेदारी भावी पीढ़ियों पर है। उनके मार्गदर्शन के लिए इस प्रकार के समारोह का आयोजन सर्वथा उचित है।

12. शास्त्रों में कहा गया है कि ''सेवा परमो धर्मः'' अर्थात् सेवा ही परम धर्म है। नर सेवा ही नारायण सेवा है। यह सिद्धान्त हमारे समाज में बहुत–सी संस्थाओं को प्रेरणा देता है। इसी कड़ी में इस संस्था द्वारा ऐसी सेवा गतिविधियों को संचालित किया जा रहा है। ऐसे समाजसेवी प्रबुद्धजन अपने अनुभव, समस्याओं और उपलब्धियों को साझा कर अपने सकारात्मक ऊर्जा के प्रवाह से और अधिक लोगों की सेवा कर उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकेंगे एवं सशक्त भारत के निर्माण में अपना योगदान दे सकेंगे।

13. मुझे बताया गया है कि चार सत्रों में आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम के प्रथम सत्र में जहां विवाह योग्य युवक–युवतियों का निःशुल्क पंजीयन होगा, वहीं दूसरे एवं तीसरे सत्र में युवक–युवतियों का परिचय कार्यक्रम होगा। वहीं चतुर्थ सत्र में परिणय हेतु निश्चित जोड़ों का परिणय कार्यक्रम भी (विवाह कार्यक्रम) आयोजित किया जाएगा।

16. आज यहां पर राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, गुजरात एवं महाराष्ट्र सहित देशभर से आए हुए किरार, धाकड़ एवं मालव समाज के सम्मानित जन यहां उपस्थित हैं। आप सभी सम्मानित जनों से निवेदन है कि आप अपने समाज को

इस प्रकार मार्गदर्शन दें कि वह न केवल अपने समाज बल्कि सम्पूर्ण प्रदेश एवं देश के लिए प्रेरणास्रोत बने। आपका समृद्ध इतिहास आपके समृद्ध भविष्य की नींव है। मैं उन सभी महानुभावों को साधुवाद देती हूं जिन्होंने समाज के प्रति अपने दायित्वों का बखूबी निर्वहन किया है।

16. मैं एक बार पुनः, इस अखिल भारतीय किरार क्षत्रिय महासभा एवं अखिल भारतीय श्री धाकड़ महासभा द्वारा आयोजित इस युवक–युवती परिचय सम्मेलन की पूर्ण सफलता की कामना करती हूं।

धन्यवाद।

————————